रेशम पर चीन के एकाधिकार को चुनौती

नवीन पुरातात्विक खोजों से संकेत मिलता है कि प्राचीन काल में रेशम का उत्पादन संभवतः सिर्फ चीन में ही नहीं होता था। हो सकता है कि हड़प्पा सभ्यता में भी इस टेक्नॉलॉजी का विकास लगभग उसी समय हो चुका था।

पूर्वी पाकिस्तान में सिंधु घाटी के स्थलों से मिले आभूषणों में रेशम के धागे पाए गए हैं। हड़प्पा सभ्यता लगभग 4000 वर्ष पूर्व फल-फूल रही थी। इन धागों के विश्लेषण से लगता है कि ये शायद उस इलाके के रेशम के कीड़े द्वारा बनाए गए रेशम से तैयार किए गए थे। आम तौर पर माना जाता है कि रेशम की कताई पर काफी समय तक चीन का एकाधिकार था।

इस बात के तो स्पष्ट व अकाट्य प्रमाण हैं कि चीन में रेशम की कताई कम से कम 2570 ईसा पूर्व के काल में होती थी। हाल में हड़प्पा स्थलों से जो धागे मिले हैं वे 2450 से 2000 ईसा पूर्व के बीच के काल के हैं। इससे पहले चीन से बाहर तैयारशुदा रेशम के नमूने नहीं मिले थे।

उपरोक्त अध्ययन पाकिस्तान व अमरीका के शोधकर्ताओं का संयुक्त उद्यम है। इसके निदेशक हार्वर्ड विश्वविद्यालय के आइरीन गुड का मत है कि यह चीन से बाहर इतने प्राचीन समय में रेशम का पहला प्रमाण है।

उक्त आभूषण सिंधु घाटी के दो स्थलों से प्राप्त हुए थेः एक तो हड़प्पा शहर से और दूसरे हड़प्पा से 500 कि.मी. दक्षिण में चान्हू-दारो नामक स्थल से जो आजकल सिंध सूबे में है। ये उत्खनन 1999 व 2000 में किए गए थे मगर इनका विश्लेषण हाल ही में पूरा हो पाया है।

रेशम के धागे के विश्लेषण में यह देखा जाता है कि उसकी गोलाई कैसी है क्योंकि इससे पता चलता है कि यह किस तरह के सुराख में से निकलकर बना होगा। इससे यह पता करने में मदद मिलती है कि इसे किस कीड़े ने बनाया होगा। इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से अवलोकन करने पर पता चला कि हड़प्पा से प्राप्त रेशम पतंगे की जीनस *एंथेरिया* की किसी प्रजाति द्वारा बनाया गया है। ये पतंगे दक्षिण एशिया में पाए जाते हैं। दूसरी ओर, चान्हू-दारो से प्राप्त रेशम की उत्पत्ति स्पष्ट नहीं हो पाई है मगर यह भी एंथेरिया की ही किसी प्रजाति द्वारा बनाया गया लगता है। इसके विपरीत चीन से प्राप्त रेशम पालतू बनाए गए *बॉम्बिक्स मोरी* नामक पतंगे द्वारा निर्मित होता है।

शोधकर्ताओं का मत है कि हड़प्पा स्थलों से प्राप्त रेशम को रीलिंग नामक तकनीक से तैयार किया गया होगा। इसका मतलब शायद यह है कि यह टेक्नॉलॉजी भी मात्र चीन तक सीमित नहीं थी। वैसे इसका मतलब यह भी हो सकता है कि इन दो सभ्यताओं के बीच काफी लेन-देन हुआ करता था। यह पता करने के लिए अभी और अनुसंधान की ज़रूरत होगी कि क्या रेशम के ये धागे हड़प्पा स्थलों पर तैयार किए गए थे या व्यापार के ज़रिए चीन से लाए गए थे। ***(स्रोत फीचर्स)***